रात्रीक्लास ओमशांति शिवबाबा याद हैं? 4.2.68

हरेक का पोजीशन अलग2 होता है। मनुष्य तो सर्वव्यापी कह देते तो सब एक हो जाता है। उनकी महिमा ही नहीं रही। गाते भी हैं उंच ते उंच भगवान। तो उंच ते उंच ठिक्कर–भित्तर थोड़े ही कहेंगे। बिल्कुल ही कुछ नहीं जानते। जो देखो पूजो। उनके आक्युपेशन का पता ही नहीं। कृष्ण का चित्र कितने स्थानों प रखे हैं। श्रीनाथ पर जाओ, फलाने जगह जाओ, है तो एक ही भक्तिमार्ग, है घोर अंधियारा। ज्ञान है सोझरा। हरेक आत्मा स्टुडेंट है। अपने उपर ही कृपा आदि करनी है। मैं करुंगा तो यह... बनूंगा। स्टुडेंट को तो अपनी पढ़ाई पढ़नी है। और कोई बातों से तैलक ही नहीं। सच्चे2 बच्चे जो समझू ,सयाने हैं फील करते होंगे। बाप तो रास्ता बड़ा सिम्पल बताते हैं। बरोबर हम सतोप्रधान थे फिर 84के बाद सतोप्रधान बनना ही है। फिर बाप आकर रास्ता बताते हैं। पद तो बहुत ही उंचा है। मेहनत बहुत चाहिए। कैसे भी करके मैं आत्मा हूं , मैं आत्मा हूं यह याद रखना है। नाम–रूप से न्यारा होना है। पार्ट ही पूरा होना है। फिर नये सिरे पार्ट में आवेंगे। इसलिए बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। तुम बच्चों को अब स्मृति आई है हमने 84जन्म लिए हैं। बच्चों को समझ चाहिए। अपने को सुधारने के लिए गुण भी जरूर धारण करनी है। बाबा ने देखो ल0ना0 का चित्र कमरे में लगा दिया है। एमऑब्जेक्ट को देखने से बुद्धि में याद आवेगा। हम यह बनते हैं। बाबा युक्ति बताते हैं। जो करेंगे सो पावेंगे। टीचर के साथ कब किसकी दुश्मनी हो नहीं सकता। उनका काम ही है पढ़ाना। स्टुडेंट का भी काम है पढ़ाई में लगना और कैरेक्टर को भी सुधारना है। इसमें बहुत कैरेक्टर सुधर जाना है। अपन को आत्मा समझा भाई2 को देखो। इसमें समझ बड़ी अच्छी चाहिए। जो पढ़ते हैं उनको घड़ी2 अंदर में आना चाहिए। दूसरों को भी सिखलाना है। अगर सर्विस नहीं करते हैं तो और खयालात में ही बुद्धि लगी रहेगी। बाप कहते हैं तुमको तात सारा दिन यही लगी रहनी चाहिए। बाप से हम यह वर्सा पाते हैं विश्व की बादशाही का। ऐसे नहीं सिर्फ चित्र रखे और दैवी गुण कुछ भी नहीं। इससे फायदा ही क्या? यह तो नशा चढ़ना चाहिए। वह चढ़ेगा सर्विस करने वाले को। बाबा जानते हैं इनको नारायणी तो धूर भी नहीं। प्रजा भी पाई जैसे के बनेंगें। खुद भी समझ सकते हैं। कोई2 मूर्ख होते हैं जो नहीं समझते हैं। बाबा ने तो ल.ना. का चित्र रख दिया। वाह, बाबा द्वारा यह बनना है। मनमनाभव हुआ ना। यह एमऑब्जेक्ट है ना। वह खुशी आवे कहां से? गायन भी है अतिइन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। बाबा कहते हैं अगर उन्नति करनी हो तो इस चित्र के आगे बैठ जाओ। पुरुषार्थ करना है। नाम मात्र सिर्फ नहीं रखना है। वह तो फाल्तू है। ल0ना0 के चित्र नीचे अपना भी फोटो रख दो। हम यह बन रहे हैं। जब तक अवस्था पक्की हो यह बच्चों के लिए है। पक्के को तो चित्र की दरकार ही नहीं। खुशी का पारा चढ़ेगा सर्विसेबुल को। उनमें दैवीगुण भी होंगे। समझ से काम किया जाता है। हरेक को अपने अंदर देखना है हमारे में कोई खामी तो नहीं है। बेहद के बाप साथ लव है? सारी दुनियां इस समय मुर्दाबाद है। कब्रिस्तान है। हम अभी परिस्तानी बन रहे हैं। बाबा तो बुजुर्ग है ना। कब किसको कुछ भी खयाल न होगा। बाबा तो बच्चे कह बात करते हैं। हेर पड़ी हुई है। हरेक के वातावरण ,चलन, खान–पान, बोलना सबसे मालूम पड़ जाता है। बहुत मीठा बनना है। शिवबाबा का यज्ञ है। इस पर तो न्यौछावर होना है। कितना तरस आना चाहिए। बच्चे बिचार मूंझे हुए हैं। तुम तो सजे के औलाद सजे। अंधों को रास्ता बताते हो। यह गोला तो बहुत क्लीयर है। ऐसे चक्र कई शास्त्रों में भी दिखाते हैं। बाबा ने देखा है ऐसे चक्र के सिर्फ लकीर पड़े रहते हैं और कुछ भी नहीं। तीन /चार लकीर होते हैं। तुम्हारा गोला तो है अर्थ सहित। यह गोला तो बहुत बड़ा बनाना चाहिए। कोई2 चित्र बहुत बड़े2 होते हैं। पत्थर का बुत बहुत बड़ा2 जमीन से (निकालते) हैं। वास्तव में इतने बड़े कोई आदमी होते नहीं। यह तो गोला बहुत ही छोटा है। यह तो बहुत बड़ा 6फुट का बनाना है। जो बिल्कुल क्लीयर देखने में आये। इनमें भी क्लीयर है। कब कौन आते हैं, नई दुनियां में कितने मनुष्य होते हैं, फट से

आपे ही देखने से ही उनको ज्ञान आ जाये। इतना बड़ा गोला होना चाहिए। 6फुट। दूर से ही कोई पढ़ सके। त्रिमूर्ति भी हो। विनाश की भी लिखते हो। डेट भी हो। एकदम बड़ा बनाय कोई दिखावे। दो/तीन हजार खर्चा होगा। हर्जा नहीं है। इनसे जितनी सर्विस होगी वह इन पाई–पैसे के चित्रों से नही होगी। जितना .....इतनी सर्विस भी होगी। तो जहां2 बड़े सेंटर्स हैं वहां इतने बड़े चित्र होनी चाहिए। बड़े2 एरोड्राम्स वा जो मुख्य स्थान है एकदम ट्रांसलाइट का भी बनाय सकते हो। जो सभी आकर देखें। पूरा.....तुमको समझाने की भी दरकार नहीं। आपे ही पढ़ेंगे। तिथि–तारीख सब लिखा हुआ हो। त्रिमूर्ति, गोला और झाड़ यह है मुख्य चित्र। ज्ञान भी बाबा यह ही समझाते हैं। बाकी तो पिक्चर्स बहुत हैं। दूसरा फिर मुख्य है गीता का भगवान कौन? इस बात में सब साधु–संत आदि का बेरा गर्क होना है। कितनी बड़ी भूल है। कहां वह 84जन्म लेने वाला ,कहां वह पुनर्जन्मरहित। बाप के बायोग्राफी में बच्चे का नाम। यह तो कब सुना ही नहीं। इससे ही सिद्ध होता है कितने पत्थर बुद्धि हैं। तुम समझाते हो उस गीता पढ़ने से नर्कवासी बने हैं। इससे स्वर्गवासी बनते हैं। महिमा तो तुम दोनों की करते हो। श्रीकृष्ण है फर्स्ट प्रिंस ;परंतु पत्थर बुद्धि इन बातों पर भी लड़ने लग पड़ते हैं। जैसे एकदम तवाई। कोई2 बुजुर्ग बच्चे होते हैं तो अच्छा समझाते हैं। छोटे बच्चे को देख खा जाते हैं। यह नहीं समझते हमारे (मुरशद) बनने वाले हैं। माथा तो झुकाना है ना। बाकी हिंसा की कोई बात नहीं। ऐसे नहीं कि कुमारियों ने बाण मारा और ....पड़ा। इसमें मजबूत लड़ाक चाहिए। आगे तो तुमको कहते थे मैदान में नहीं आते हो। अभी तो तुम बड़े मैदान में निकले हो। बाबा की मुरली बम्बई (वाले) ,देहली वाले सभी सुनते हैं। जो अपन को महारथी समझते है। तो ऐसे2 खयाल करें। कैसे बड़े चित्र बनाये जायें। भल 4 टुकड़े में बने हो तो भी हर्जा नहीं। चार टुकड़ आपस में जोड़ कर लेंगे। अच्छी रीत कोई जांच करे तो सब कुछ मिल सकता है। बड़े सीट भी मिल सकते हैं। विलायत में भी बहुत कुछ मिल सकता है। अच्छा ड्यूटी पड़ेगी। वह भी युक्ति से काम करना पड़े। ऐसी विशाल बुद्धि बच्चों की आने वाली है। बड़े2 सीट्स विलायत से मंगावेंगे ट्रांसलाइट के। बाबा को दर्जन तो चाहिए बड़े2 गांव के लिए। ऐसी जगह लगानी चाहिए जहां से सभी पास करें। .... में बहुत जाते हैं। ऐसे बहुत जगह हैं। जैसे सरकस आती है। बहुत मनुष्य देखते हैं। एरोड्राम भी बहुत अच्छा है। कलकत्ते में चौरंगी रोड बहुत अच्छा है। देहली में कनाट प्लेस है। ऐसे2 स्थानों पर बड़े2 चित्र लगा दो। इन्श्योर भी करा दो अथवा सिपाही भी खड़ा कर सकते हैं। बहुत ढेर सर्विस होगी। सारी नालेज का यह तंत है। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। अब इन बातों में कौन ध्यान देंगे? जगदीश है, ईन्द्र है, मोहनी है, कुमारका आदि हैं। उन्हों को माथा मारना पड़े। लिखा–पढ़ी करनी पड़े। फीमेल्स को चला जाना चाहिए। बोलो, हमको ऐसी चीज चाहिए दुनियां के कल्याण के लिए। विलायत में भी चंद्रु बच्चा है। इस रुहानी सर्विस से बहुत लव चाहिए। निकलेंगे जरूर , जो ऐसे2 सर्विस करेंगे। सारा मदार इस झाड़ ,त्रिमूर्ति पर ही है। बाबा अभी भी कहते हैं 5/5 हजार एक2 चित्र भी खावे कोई हर्जा नहीं। अच्छा, हम आज ऑर्डर देता हूं। 6चित्र एक2 के बनाओ। खर्चा की तो बात ही नहीं कोई बनाय दिखावे। बाबा अभी ऑर्डर देते हैं। इतना बड़ा 6फुट। झाड़, त्रिर्मू ,गोला। ट्रांसलाइट के 6/6 का ऑर्डर दे दो। अगर नमूना दिखावें तो लाख रुपया एडवांस दे दो। चंद्रु बच्चा कुछ करके दिखावे तो कहें चंद्रु ने तो कमाल की। बड़े ही फर्स्टक्लास सर्विस की। अच्छा, बड़े2 शीट न हो तो जोड़े कर देंगे। अपन को नालेज से काम है। अभी नजदीक आते–जाते हो। प्रभाव तो निकलेगा ना बच्चों का। यह होने का है। बम्बई वाले, देहली वाले यह काम कर सकते हैं। कलकत्ते में भी जरूर ट्रांसलाइट बनाने वाले होंगे या प्रबंध कर देने वाले होंगे। वहां भी दो/चार अच्छे बच्चे हैं। सभी बच्चे सुनेंगे। बाबा को समाचार देंगे। तिथि–तारीख भी हो। यहां से यहां तक राज्य किया। क्लीयर अक्षर हो। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। नमस्ते।